असि पटापेलय सेल [1]मेलय सूर तुट्टहि सुब्भरं ॥ छं० ॥ २३० ॥
परि सीस हक्कहि धर हहक्कहि अंत पाइ अलुब्भरं ॥
उठि उट्ठि क्कसि केम उक्कसि सांइ सुध्यल्ल [2]जुब्भरं ॥
एकेक चंपहि पीठ नंषहि धरनि धर परिपूरयं ॥
हक्कियं सु बेगं अल्लिय महमद करिय द्रग्ग करूरयं ॥ छं० ॥ २३१ ॥
सम चले गज्जह देषि रज्जह जीह हनि हनि जंपियं ॥
आवंत दून मसंद राजह देषि चच्चर चंपियं ॥
हनि संग ऊरह प्रान पूरह दो कलेवर गोइयं ॥
विद्ध वि राजह परे गाजह संगि एक परोइयं ॥ छं० ॥ २३२ ॥
रस रुद्र बीर भयान मच्चिय काल नच्चिय नोदयं ॥
हक्कीय राज दुअप्प सुब्भर बीर बीरह मोदयं ॥
हँकि सूर मंत गयन्न लग्गिय बाह चंपिय आवधं ॥
ढिल्लि असुर सयंन पिंड पंचह चंपि जंपिय सावधं ॥ छं० ॥ २३३ ॥
जामेक जुद्ध अरुद्ध लग्गिय बीर जंपिय बीरयं ॥
सिद्धीय सिद्धय संत रासह ग्रध्र सोनह सीरयं ॥
.... ॥
.... ॥ छं० ॥ २३४ ॥

वरनी युद्ध वर्णन ।

कवित्त ॥ हय गय हय हय अरथ । रथ्थ नर नर सों लग्गा ॥
हय सों हय पायल्ल सु । पाय करि सों करि भग्गा ॥
ईस आन बर चवै । सूर सूरन हक्कारिय ॥
सार धार भिल्लै । प्रहार बीरा रस धारिय ॥
धरि एक भयानक रुद्र हुअ । सीस माल गंठी सु कर ॥
कविचंद दंद दुअ दल भयौ । मुगति मग्ग पुल्ले विदर ॥छं०॥२३५॥

लोहाना का फुर्तीलापन ।

साटक ॥ सीतं [3]गोप सरेत भीतय बरं नर जोति दिष्षी गुरं ॥
रंभं रंभ सुरथ्थयं च अमृतं आलंब वाहं बरं ॥

(१) ए. कृ. को.-सेलहि । (२) ए. कृ. को.-जुध्थरं । (३) ए. कृ. को.-तोप ।